ISSN: 2583-0511 (Online)

बकरी पालन में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक का महत्व

डॉ. अवनीश कुमार सिंह एवं डॉ. विकास सचान
मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, दुवासू, मथुरा

हमारे देश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में बकरी पालन की महत्वपूर्ण भूमिका है एवं देश के विभिन्न प्रान्तों में इसका व्यवसायीकरण तीव्रता से हो रहा है। बकरियों में न केवल विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में अपने को ढालने की क्षमता बल्कि कम समय अंतराल पर पुनः गर्भित होना तथा एक या अधिक बच्चों को जन्म देने का लाभकारी गुण होता है। साथ ही साथ बकरी पालन में खानपान व रखरखाव पर कम खर्च होने के साथ मांस, दूध जैसे बहुमूल्य उत्पादों के लिए भी यह व्यवसाय अत्यन्त उपयोगी है। इस व्यवसाय को सफल एवं अधिक लाभकारी बनाने में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक अत्यन्त प्रभावी सिद्ध हो रहा है, जिसकी आधारभूत जानकारी होना बकरी पलकों के लिए नितांत आवश्यक है।

कृत्रिम गर्भाधान तकनीक में अच्छी आनुवांशिकता एवं उत्पादकता वाले बकरों का वीर्य कृत्रिम योनि के द्वारा एकत्र तथा हिमीकृत करके, मद में आने वाली बकरियों को गर्भित करने के लिए उनके प्रजनन अंग में कृत्रिम विधि से डाला जाता है। इस तकनीक के सफल परिणाम हेतु बकरी पालक को मादा पशु में मद के लक्षणों की जानकारी होना अति आवश्यक है। बकरी का बेचौन रहना, खान-पान तथा दुग्ध उत्पादन में कमी होना, बार-बार पेशाब करना तथा पूंछ उठाकर/हिलाकर विशेष प्रकार की आवाज करना, योनि मार्ग से पारदर्शी द्रव्य (जेरी) का स्राव होना, योनि द्वार का हल्का लाल एवं चिकना होना, बाड़े/झुण्ड के अन्य बकरियों पर चढ़ना तथा बकरे को अपने ऊपर चढने देना इत्यादि मद काल के मुख्या लक्षण होते हैं।

उपर्युक्त बताये गए लक्षणों के अतिरिक्त बाड़े/झुण्ड में अधिक बकरियों के होने पर सुबह एवं शाम दोनों समय एक व्यस्क बकरे के पेट पर कपड़ा बांधकर (जिससे लिंग बाहर ना निकल सके) छोड़ने पर गर्मी में आयी बकरियों का आंकलन और भी सरल, सफल एवं सटीक तरीके से किया जा सकता है। सामान्यतः बकरियों का मदकाल लगभग 24 से 40 घंटे का होता हैं, परन्तु गर्भाधान गर्मी के लक्षण दिखने के लगभग 12 घंटे बाद पर ही करवाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर शाम को गर्मी दिखाने वाली बकरी का गर्भाधान अगले दिन की सुबह करवा देना चाहिए जिससे शुक्राणुओं एवं अण्डों का उपयुक्त समय पर संयुग्मन हो और बकरी सफलतापुर्वक गर्भित हो सके।

ISSN: 2583-0511 (Online)

कृत्रिम गर्भाधान विधि के बहुत सारे लाभ होते हैं। एक उच्च नस्ल के बकरे से प्राप्त वीर्य से कृतिम गर्भाधान विधि द्वारा कई सारी बकरियों को गर्भित किया जा सकता है। जिससे अधिक बकरों के रखरखाव एवं खानपान पर होने वाले खर्च से बचा जा सकता है। कृत्रिम गर्भाधान में उपयोग किया जाने वाला वीर्य पूर्णतरू स्वस्थ एवं वयस्क बकरे से एकत्र किया जाता है, जिससे बकरियों में प्रजनन जनित होने वाले संक्रमण से बचा जा सकता है। उच्च आनुवंशिकता एवं उत्पादकता वाले बकरें के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करवाने से कम समय में ही पशुपालक एक उच्च नस्ल के पशुओं का समूह तैयार कर सकते हैं। उच्च नस्ल के बकरें की मृत्यु के पश्चात् भी वीर्य को हिमीकृत तकनीक से सरंक्षित कर भविष्य में कृत्रिम गर्भाधान हेतु उपयोग किया जा सकता है। यह तकनीक ऐसे पशुओं में भी अत्यन्त कारगर हैं, जिनमे नर और मादा पशु की नस्ल तथा आकर आदि में विषमता हो, आपस में सामंजस्य ना हो। हिमीकृत वीर्य को तरल नाइट्रोजन में रखकर एक स्थान से दूसरे स्थान या बकरी के बाड़े तक आसानी से लाया जा सकता हैं। बकरे को बकरी के पास या बकरी को बकरे के पास नहीं ले जाना पड़ता है, जिससे समय के साथ यातायात में होने वाले खर्च में भी बचत होती है।

वर्तमान समय में बकरियों हेतु यह सुविधा सीमित स्थानों पर ही उपलब्ध हैं, परन्तु इसका विकास अत्यन्त तीव्र गति से किया जा रहा है। गाय/भैस की तुलना में बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान करना आसन होता है, जिसको महिलाएं एवं पुरुष प्रशिक्षण प्राप्त कर आसानी से सीख सकते हैं। निश्चय ही बकरियों के लिए कृत्रिम गर्भाधान नस्ल, आनुवंशिकता एवं उत्पादकता सुधार हेतु अत्यन्त ही सफल एवं प्रभावी तकनीक सिद्ध है। इसके लिए बकरी पालकों को जागरूक होने के साथ उपरोक्त जानकारियों से अवगत होना भी नितांत आवश्यक है। किसी भी समस्या या संदेह होने पर अपने नजदीकी प्रशिक्षित पशुचिकित्सक से जानकारी एवं परामर्श लेकर उचित प्रबंधन करना अत्यंत आवश्यक है।